इस संदर्भ में कई सवाल उठ सकते हैं कि किसी विषय को पाठ्यक्रम का अंग बनाने की क्या-क्या शर्तें होती हैं और ज्योतिष या कोई अन्य विषय उन्हें पूरी करता है या नहीं। वैसे इस सम्बंध में रुचि रखने वाले लोग उस दौर के इतिहास पर गौर कर सकते हैं जब खुद विज्ञान पाठ्यक्रम में शामिल होने का संघर्ष कर रहा था।

ज्योतिष एक विज्ञान कैसे हो सकता है?

डॉ. सुशील जोशी

आजकल यह गरमागरम बहस का विषय है कि ज्योतिष विज्ञान है या नहीं। बहस इस संदर्भ में शुरू हुई है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालयों से कहा है कि वे ज्योतिष के पाठ्यक्रम शुरू करें। गौरतलब है कि यहां बात फलित ज्योतिष की हो रही है।

इस संदर्भ में कई सवाल उठ सकते हैं कि किसी विषय को पाठ्यक्रम का अंग बनाने की क्या-क्या शर्तें होती हैं और ज्योतिष या कोई अन्य विषय उन्हें पूरी करता है या नहीं। वैसे इस सम्बंध में रुचि रखने वाले लोग उस दौर के इतिहास पर गौर कर सकते हैं जब खुद विज्ञान पाठ्यक्रम में शामिल होने का संघर्ष कर रहा था।

बहरहाल, इस लेख का दायरा थोड़ा सीमित है। हम यहां सिर्फ़ इस बात पर विचार करेंगे कि क्या ज्योतिष को एक विज्ञान कहा जा सकता है।

बी.ए. ज्योतिष

बात को शुरू करने के लिए यह प्रश्न काफी रोचक रहेगा - जब कुछ छात्र ज्योतिष विषय के साथ बी.ए. या एम.ए. करके निकलेंगे तो उनके सामने क्या स्थिति होगी? उम्मीद की जानी चाहिए कि वे ग्रह-नक्षत्रों की गणनाएं करने में पारंगत होंगे। शायद वे पंचांग देखकर बता पाएंगे कि किस समय विशेष पर ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति क्या थी अथवा क्या होगी। परंतु क्या वे सूर्य, चंद्रमा, राहु, केतु को भी ग्रह मानेंगे? आज हम जानते हैं कि सूर्य एक तारा है और चंद्रमा एक उपग्रह है, जबकि राहु-केतु का कोई भौतिक अस्तित्व ही नहीं है। तब क्या वे राहु-केतु के प्रभाव की गणना करते रहेंगे जबकि उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है? संक्षेप में सवाल यह है कि वे ग्रह-नक्षत्रों सम्बंधी आधुनिक ज्ञान का ख्याल करेंगे या नहीं। यदि करेंगे तो उनकी ज्योतिष सम्बंधी मान्यताओं का क्या होगा और यदि नहीं करेंगे तो वास्तविकता से उनके ज्ञान का अथवा उनकी भविष्यवाणियों का क्या सम्बंध रह जाएगा?

फिलहाल हम यह सवाल नहीं उठा रहे हैं कि फलित ज्योतिष की इस मान्यता में कितना दम है कि ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति मानव के चरित्र व उसके भविष्य का निर्धारण करती है। यहां तो सवाल मात्र इतना है कि क्या ज्योतिष समय के साथ बढ़ते ज्ञान के साथ तालमेल रख पाया है। क्या वह नए-नए अवलोकनों से प्राप्त जानकारी के साथ अपने सिद्धांतों को जोड़े रख पाया है? आइए कुछ उदाहरणों से इस बात को समझने का प्रयास करें।

नए ग्रह

यदि यह मान लिया जाए कि ग्रहों की स्थिति के आधार पर 'जातक' का भविष्य वगैरह बताया जा सकता है तो कई सवाल उठते हैं। जैसे आज भी ज्योतिष लोग जो जन्म कुण्डली बनाते हैं उनमें आपको राहु और केतु नज़र आएंगे, जबकि उनका अस्तित्व न होने की बात प्रमाणित हो चुकी है। दूसरी ओर आपको इन जन्म कुण्डलियों में युरेनस, नेप्चून और प्लूटो का नामो निशान नहीं दिखेगा। पिछले वर्षों में ये तीन ग्रह खोजे गए हैं। कहने का मतलब यह है कि विज्ञान की परंपरा के विपरीत ज्योतिष ने कभी भी बढ़ते ज्ञान के साथ कदम मिलाकर चलने की कोशिश ही नहीं की। विज्ञान ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जब नए-नए अलोकनों के प्रकाश में पूर्व स्थापित सिद्धांतों का स्थान नए सिद्धांतों ने लिया। विज्ञान में यह प्रगति का द्योतक माना जाता है।